अनुबंध 7.5
शब्दावली

उपचित ब्याज

किसी बांड पर उपचित ब्याज बांड पर ब्याज की वह राशि होती है, जो पिछले कूपन भुगतानों के बाद से संचित हुई हो। ब्याज का अर्जन किया गया है, लेकिन चूँकि कूपनों का भुगतान नियत अंतरालों पर किया जाता है, इसलिए निवेशक को यह राशि अभी भी उपलब्ध नहीं हुई है । भारत में जी-सिक के लिए दिन गिनने की परंपरा है 30/360।

बोली कीमत/आय

वह कीमत/आय, जो किसी प्रतिभूति के लिए भावी क्रेता द्वारा प्रस्तावित की जा रही है ।

प्रतियोगी बोली

प्रतियोगी बोली स्टॉक के लिए ऐसी कीमत पर लगायी गयी बोली को निर्दिष्ट करती है, जो बोली लगाने वाले द्वारा किसी नीलामी में बतायी गयी हो ।

कूपन

किसी ऋण प्रतिभूति पर भुगतान की गयी ब्याज दर, जिसकी गणना प्रतिभूति के अंकित मूल्य के आधार पर की जाती है।

कूपन आवृत्ति

कूपन भुगतान नियमित अंतरालों पर ऋण प्रतिभूति के अस्तित्व में बने रहने के दौरान किये जाते हैं और वे तिमाही, छमाही (वर्ष में दो बार) या वार्षिक भुगतान हो सकते हैं ।

अंकित मूल्य

अंकित मूल्य वह राशि है, जो किसी निवेशक को प्रतिभूति की परिपक्वता तिथि को भुगतान की जाती है । ऋण प्रतिभूतियाँ भिन्न-भिन्न अंकित मूल्यों पर जारी की जा सकती हैं, तथापि, भारत में उनका विशिष्ट रूप से अंकित मूल्य 100 रुपये होता है। अंकित मूल्य को सममूल्य पर चुकौती राशि के रूप में भी जाना जाता है । इस राशि को शोधन मूल्य, मूलधन मूल्य (या केवल मूलधन), परिपक्वता मूल्य या सममूल्य के रूप में भी निर्दिष्ट किया जाता है ।

अस्थिर दर वाले बांड

ऐसे बांड, जिनकी ब्याज दर पूर्व-निर्दिष्ट बाजार ब्याज दर में परिवर्तन के साथ बदलती है ।

श्रेष्ठ/सरकारी प्रतिभूतियाँ

सरकारी प्रतिभूतियों को श्रेष्ठ प्रतिभूतियों के रूप में भी जाना जाता है । ''सरकारी प्रतिभूति'' से अभिप्रेत है सरकार द्वारा सृजित और जारी की गयी कोई प्रतिभूति, जो लोक ऋण जुटाने के लिए या किसी अन्य प्रयोजन के लिए, जो सरकार द्वारा शासकीय गजट में अधिसूचित किया जाये और लोक ऋण अधिनियम, 1944 में उल्लिखित किसी एक प्ररूप में हो ।

एलएएफ

चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) एक ऐसी सुविधा है, जिसके द्वारा भारतीय रिज़र्व बैंक घरेलू बाजार (भारत) में दैनिक चलनिधि का समायोजन या तो रकम का अंतःक्षेप करके या रकम को निकालकर करता है ।

परिपक्वता तिथि

वह तिथि, जब मूलधन (अंकित मूल्य) वापस अदा किया जाता है । अंतिम कूपन और ऋण प्रतिभूति का अंकित मूल्य निवेशक को परिपक्वता तिथि को चुकाया जाता है । परिपक्वता का समय भिन्न-भिन्न हो सकता है, जो अल्पावधि से लेकर दीर्घावधि (30 वर्ष) तक का हो सकता है ।

गैर प्रतियोगी बोली

गैर प्रतियोगी बोली का अर्थ यह है कि बोली लगाने वाला दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियों की नीलामी में बोली में कोई आय या कीमत को उद्धृत किये बिना भाग ले सकेगा । गैर प्रतियोगी खंड को आबंटन उस भारित औसत दर पर होगा,

अनुबंध 7.5
शब्दावली *(जारी)*

जो प्रतियोगी बोली के आधार पर नीलामी में उभर कर आयेगी। यह एक आबंटनकारी सुविधा है, जिसमें कुल प्रतिभूतियों का एक हिस्सा सफल प्रतियोगी बोली की भारित औसत दर पर बोली लगाने वालों को आबंटित किया जाता है।

खुला बाजार परिचालन

केंद्रीय बैंक धन के विनिमय में बांडों की खरीद करते हैं, इस प्रकार धन का स्टॉक बढ़ाते हैं या बांड की बिक्री करते हैं; इस प्रकार धन का स्टॉक घटाते हैं । इस परिचालन को खुला बाजार परिचालन कहा जाता है ।

कीमत

उद्धृत कीमत प्रति 100 रुपये के अंकित मूल्य के लिए होती है । किसी वित्तीय लिखत की कीमत प्रत्याशित नकदी प्रवाह के वर्तमान मूल्य के बराबर होती है । किसी ऋण प्रतिभूति के लिए जो कीमत कोई अदा करता है, वह अनेक कारकों पर आधारित होती है । नयी जारी की गयी ऋण प्रतिभूतियों की बिक्री या समाप्ति अंकित मूल्य पर की जाती है । द्वितीयक बाजार में, जहाँ पहले जारी की गयी ऋण प्रतिभूतियों की खरीद-बिक्री निवेशकों के बीच की जाती है, बांड की जो कीमत कोई अदा करता है, वह अनेक चर वस्तुओं पर आधारित होती है, जिसमें बाजार ब्याज दर, उपचित ब्याज, मांग और पूर्ति, साख गुणवत्ता, परिपक्वता तिथि, निर्गम का स्वरूप, बाजार की घटनाएँ और लेनदेन का आकार शामिल होते हैं ।

प्राथमिक व्यापारी

सरकारी उधार को यथासंभव सस्ता और दक्षतापूर्वक जुटाने की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से उच्च अर्हताप्राप्त वित्तीय फर्म/बैंकों के एक ग्रुप को नियुक्त किया जाता है कि वह सरकारी प्रतिभूति बाजार में एक ओर जारीकर्ता और दूसरी ओर बाजार के बीच विशेषज्ञ मध्यस्थ की भूमिका निभाये । इन्हें सामान्यतः प्राथमिक व्यापारी या बाजार निर्माता कहा जाता है। दायित्वों के एक सेट, यथा, विपणनयोग्य सरकारी प्रतिभूतियों के लिए निरंतर बोली लगाने तथा कीमत का प्रस्ताव देने या नीलामियों में समुचित बोली प्रस्तुत करने, के बदले में ये फर्में प्राथमिक/द्वितीयक बाजार में विशेषाधिकार का एक सेट प्राप्त करती हैं ।

प्राइवेट प्लेसमेंट

प्राइवेट प्लेसमेंट किसी कंपनी द्वारा जारी की गयी प्रतिभूति में अभिदान करने के लिए दिया गया सीधा प्रस्ताव होता है, जो उस व्यक्ति, जिसे प्रस्ताव दिया जाता है, से भिन्न किसी व्यक्ति को उपलब्ध नहीं होता । कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 67(3) में यह विनिर्दिष्ट करते हुए कि किससे सार्वजनिक प्रस्ताव नहीं बनता, दो शर्तें निर्धारित की गयी हैं, यथा, (क) शेयर और डिबेंचर उन व्यक्तियों को अभिदान के लिए उपलब्ध नहीं हों, जो प्रस्ताव प्राप्त करने वाले व्यक्ति से भिन्न हों, और (ख) प्रस्ताव 50 से कम व्यक्तियों को दिया जाना चाहिए ।

रेपो दर

रेपो दर किसी रेपो लेनदेन के संबंध में, जो एक वार्षिक ब्याज दर के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है, अर्जित प्रतिलाभ होती है ।

रेपो/रिवर्स रेपो

रेपो से अभिप्रेत है केंद्र सरकार या किसी राज्य सरकार की प्रतिभूतियों या किसी स्थानीय प्राधिकरण की ऐसी प्रतिभूतियों को, जो इस निमित्त केंद्र सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट की जायें या विदेशी प्रतिभूतियों को इस करार के साथ बेचना कि उक्त प्रतिभूतियों को परस्पर सहमत भविष्य की तिथि में किसी सहमत कीमत पर, जिसमें उधार ली गयी निधि के लिए ब्याज शामिल है, पुनः खरीदा जायेगा ।

रिवर्स रेपो से केंद्र सरकार या किसी राज्य सरकार की प्रतिभूतियों या किसी स्थानीय प्राधिकरण की प्रतिभूतियों को, जो केंद्र सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट की जायें या विदेशी प्रतिभूतियों को इस करार के साथ खरीदते हुए निधियां उधार देने की लिखत अभिप्रेत है उक्त प्रतिभूतियों को

अनुबंध 7.5
शब्दावली *(समाप्त)*

परस्पर सहमत भविष्य की तिथि में किसी सहमत कीमत पर पुनः बेचा जायेगा, जिसमें उधार दी गयी निधि के लिए ब्याज शामिल है ।

द्वितीयक बाजार

वह बाजार, जिसमें बकाया प्रतिभूतियों का लेनदेन किया जाता है । जब प्रतिभूतियाँ पहली बार बेची जाती हैं, तब यह पद प्राथमिक या प्रारंभिक बाजार से भिन्न होता है । द्वितीयक बाजार उस क्रय-विक्रय को निर्दिष्ट करता है, जो प्रतिभूति की प्रारंभिक सार्वजनिक बिक्री के बाद किया जाता है ।

टैप सेल

टैप सेल के अंतर्गत प्रतिभूतियों की कुछ मात्रा सृजित की जाती है और बिक्री के लिए उपलब्ध करायी जाती है, जो सामान्यतः एक न्यूनतम मूल्य के साथ होती है और बाजार में जैसे ही बोली लगायी जाती है, वैसे ही उन्हें बेच दिया जाता है । ये प्रतिभूतियाँ दिन में किसी भी समय या सप्ताहों में बेची जा सकती हैं; और प्राधिकारियों के पास यह लोच उपलब्ध होता है कि वे (न्यूनतम) मूल्य बढ़ा दें, यदि मांग जोरदार हो या उसे घटा दें, यदि मांग कमजोर हो । टैप सेल और निरंतर बिक्री बहुत हद तक समान पद हैं, सिवाय इसके कि टैप सेल में ऋण प्रबंधक अधिक सक्रिय रूप से टैप सेल की उपलब्धता और सांकेतिक कीमत निश्चित कर सकता है। निरंतर बिक्री अनिवार्य रूप से बाजार की पहल पर की जाती है।

खजाना बिल

सरकार के ऋण दायित्व, जिनकी परिपक्वता एक वर्ष या कम की होती है, उन्हें सामान्यतःखजाना बिल या टी-बिल कहा जाता है । खजाना बिल कोषागार/सरकार के अल्पावधि दायित्व होते हैं । वे अंकित मूल्य से एक बट्टे पर जारी की गयी लिखतें होते हैं और मुद्रा बाजार का अभिन्न हिस्सा होते हैं ।

हामीदारी

वह व्यवस्था, जिसके द्वारा निवेश बैंकर किसी प्रतिभूति के प्राथमिक निर्गम के अनभिदत्त हिस्से का अर्जन करने का वचन देते हैं ।

भारित औसत कीमत/आय

यह कीमत/आय का भारित औसत माध्य होता है जहाँ भार वह राशि होती है, जिसका प्रयोग उस कीमत/आय पर किया जाता है । गैर प्रतियोगी खंड को आबंटन उस भारित औसत कीमत/आय पर होगा, जो नीलामी में प्रतियोगी बोली के आधार पर उभर कर आयेगा ।

आय

किसी प्रतिभूति पर अर्जित प्रतिलाभ की वार्षिक प्रतिशत दर। आय प्रतिभूति की खरीद कीमत और कूपन ब्याज दर का फलन होती है । आय में अनेक कारकों के अनुसार घट-बढ़ होती है , जिनमें विश्व बाजार और अर्थव्यवस्था शामिल हैं।

परिपक्वता आय (वाईटीएम)

परिपक्वता आय वह कुल प्रतिलाभ होता है, जो कोई व्यक्ति प्राप्त करने की उम्मीद रखता है, यदि प्रतिभूति को परिपक्व होने तक धारित रखा जाये । परिपक्वता आय अनिवार्य रूप से वह बट्टा दर होती है,जिस पर भविष्य के भुगतानों (निवेश आय और मूलधन की वापसी) का वर्तमान मूल्य प्रतिभूति की कीमत के बराबर होता है ।

आय वक्र

विभिन्न परिपक्वता वाले और एक ही ऋण गुणवत्ता वाले बांडों में आय और परिपक्वता के बीच आलेखी संबंध । यह रेखा ब्याज दरों की मीयादी संरचना को दर्शाती है । यह निवेशकों को भिन्न-भिन्न परिपक्वता वाली ऋण प्रतिभूतियों और कूपनों में तुलना करने में समर्थ बनाता है।